INDIAN SCHOOL AL WADI AL KABIR

Class: VI (2nd lang.)	Department: Hindi	
Worksheet No: 22	Topic: Paragraph Worksheet	Note: Pl. file in portfolio

प्रश्न – निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर चुनिए :-

किसी पर्वत प्रदेश में मन्दविष नाम का एक साँप रहता था।एक दिन उसने विचार किया कि ऐसा क्या उपाय हो सकता है, जिससे बिना परिश्रम के उसको भोजन मिलता रहे। उसके मन में तब एक विचार आया। वह मेंढकों से भरे तालाब के पास गया।

वहाँ पहुँचकर वह बेचैनी से इधर-उधर घूमने लगा। उसे घूमते देखकर तालाब के किनारे पत्थर पर बैठे मेंढक ने आश्चर्य से पूछा, "मामा! आज क्या बात है? शाम हो गई है, किन्तु तुम भोजन-पानी की व्यवस्था नहीं कर रहे हो?" सर्प बड़े दुःखी मन से कहने लगा, "बेटे! मुझे तो अब भोजन की इच्छा ही नहीं रह गई है। आज बड़े सवेरे ही मैं भोजन की खोज में निकल पड़ा था। एक सरोवर के तट पर मैंने एक मेंढक देखा। मैं उसको पकड़ने की सोच ही रहा था कि उसने मुझे देख लिया। वहाँ कुछ ब्राह्मण भक्ति में लीन थे, वह उनके मध्य जाकर कहीं छिप गया।" मेंढक के भ्रम में मैंने एक ब्राह्मण के पुत्र के अँगूठे को काट लिया। उससे उसकी मृत्यु हो गई। उसके पिता ने मुझे शाप देते हुए कहा, "दुष्ट! तुमने मेरे पुत्र को बिना किसी अपराध के काटा है, अपने इस अपराध के कारण तुमको मेंढकों का वाहन बनना पड़ेगा।" "बस, तुम लोगों के वाहन बनने के लिए ही मैं यहाँ तुम लोगों के पास आया हूँ।"

यह सुनकर मेंढक अपने साथियों के पास गया और उनको भी सर्प की वह बात सुना दी। इस प्रकार यह बात सब मेंढकों और उनके राजा जलपाद तक पहुँच गई। सबसे पहले वही सर्प के पास जाकर उसके फन पर चढ़ गया। उसे चढ़ा हुआ देखकर सभी मेंढक उसकी पीठ पर चढ़ गए। सर्प ने किसी को कुछ नहीं कहा। सर्प की कोमल त्वचा के स्पर्श को पाकर जलपाद तो बहुत ही प्रसन्न हुआ। इस प्रकार एक दिन निकल गया। दूसरे दिन जब वह उनको बैठाकर चला तो उससे चला नहीं गया। तो जलपाद ने पूछा, "क्या बात है, आज आप चल नहीं पा रहे हैं?" उसने कहा," मैं आज भूखा हूँ इसलिए चलने में कठिनाई हो रही है।" जलपाद बोला, "ऐसी क्या बात है। आप छोटे-मोटे मेंढकों को खा लिया कीजिए।"

इस प्रकार वह सर्प हर दिन बिना किसी परिश्रम के अपना भोजन पाता गया। किन्तु वह जलपाद यह भी नहीं समझ पाया कि अपने क्षणिक सुख के लिए वह अपने वंश का नाश कर रहा है। सभी मेंढकों को खाने के बाद सर्प ने एक दिन जलपाद को भी खा लिया।

सीख : अपनो की रक्षा करने से हमारी भी रक्षा होती है।

प्रश्न -1 पर्वत प्रदेश में कौन रहता था ?

* मन्दविष नाम का एक साँप
* तक्षक नाम का एक साँप
* शेषनाग नाम का एक साँप
* वासुकी नाम का एक साँप

प्रश्न -2 बिना परिश्रम के भोजन पाने के लिए साँप कहाँ गया ?

* मेंढकों से भरे तालाब के पास
* मछलियों से भरे तालाब के पास
* फलों से भरे बाग में
* पहाड़ी से ऊपर बने मुर्गीखाने में

प्रश्न -3 "मामा! आज क्या बात है? शाम हो गई है, किन्तु तुम भोजन-पानी की व्यवस्था नहीं कर रहे हो?" किसने कहा?

* झील के किनारे भक्ति करते साधु ने
* तालाब के किनारे पत्थर पर बैठे मेंढक ने
* नदी के किनारे सैर करते आदमी ने
* झील के किनारे खेलते बच्चे ने

प्रश्न -4 एक सरोवर के तट पर साँप ने किसे देखा ?

* एक मेंढक को
* एक कछुए को
* एक सारस को
* एक मगरमच्छ को

प्रश्न -5 मेंढक के भ्रम में साँप ने किसे काट लिया था?

* राजा के पुत्र के अँगूठे को
* किसान के पुत्र के अँगूठे को
* ब्राह्मण के पुत्र के अँगूठे को
* धोबी के पुत्र के अँगूठे को

प्रश्न -6 साँप को शाप किसने दिया था ?

* ब्राह्मण ने
* भक्त ने
* संत ने
* राजा ने

प्रश्न -7 मेंढक ने सर्प की बात किन्हें सुनाई थी ?

* अपने साथियों को
* अपने राजा को
* अपने भाई को
* अपने मित्र को

प्रश्न -8 मेंढकों का राजा कौन था?

* मन्दविष
* सर्पराज
* जलजीव
* जलपाद

प्रश्न -9 "मैं आज भूखा हूँ इसलिए चलने में कठिनाई हो रही है।" किसने कहा?

* जलपाद ने
* किसान ने
* ब्राह्मण ने
* मन्दविष

प्रश्न -10 सभी मेंढकों को खाने के बाद सर्प ने क्या किया?

* जलपाद को भी खा लिया
* जलजीव को खा लिया।
* मछली को भी खा लिया
* हँस को भी खा लिया।